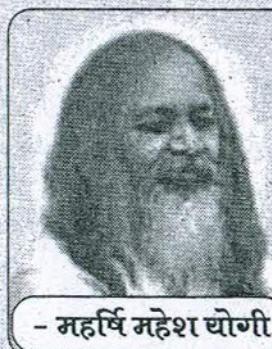


वृत्तपत्राचे नांव :— हिंन्दी मिलाप
 वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :— हैदराबाद
 वृत्तपत्र पान क :— 7
 दिनांक :— 11/08/2007

वैदिक संस्कृति है भारत की शक्ति

भारत के लिए उसकी वेद-विद्या, उसकी दैवी-शक्ति विधा ही जनमानस को जागृत करने के लिए वरदान स्वरूप है। भारतीय संस्कृति, जो ज्ञान का दीपक है, उससे सारे विश्व को प्रकाशित किया जा सकता है। यह अद्युत दीपक केवल भारत के ही पास है। जब वैयक्तिक चेतना जागृत हो जाती है, तो वह ब्राह्मी से संचालित होने लगती है और यही भारत का असली ज्ञान है। अपने हाथ में सर्वज्ञता और सर्वसमर्थता की जो कुंजी है, वह वेद ही है। भारतीय संस्कृति श्रुति में है, स्मृति में है, पुराण में है, वह सनातन है। और वेद का यह सनातन धर्म किसी का बनाया हुआ नहीं है। वह तो हमेशा से ही है। अपने ऋषियों-महर्षियों ने प्राकृतिक सत्ता को जगाने के नियम-विधान बताये हैं। इन नियमों पर भारतीय लोग परम्परा से चलते आ रहे हैं। भारत के पास ज्ञान का उजाला है। इस उजाले से भारतीय अपने-अपने घर को प्रकाशित करते ही हैं और विश्व में भी ज्ञान का उजाला फैलाते हैं।

भारत की दैवी शक्ति ध्यान-योग, यज्ञानुष्ठानों से जगती है। बिना यज्ञ से, बिना ग्रहणाति से बुझ नहीं होता है। वैदिक तकनीकों से प्रवृत्ति साम्यता जागती है। रजोगुणी, तमोगुणी, सतोगुणी प्रभाव में साम्यता आती है। भारतीय इसी स्तर पर योग, भक्ति और कर्म करते हैं। बहुत से लोग इस विधा को नहीं मानते। ऐसे लोगों को अज्ञानी समझना



- महर्षि महेश योगी

लेकिन अब आधुनिक विज्ञान शोधों द्वारा इस विधा को विज्ञान सिद्ध कर रहा है तो लोगों को समझ आ रहा है। आज भारतीय वेद-विद्या के प्रति लोगों का रुझान और विश्वास बढ़ रहा है और लोग धीरे-धीरे उसे पुनः अपना रहे हैं।

चाहिए। उन्हें नहीं पता कि मनुष्य जब अपने में की सबसे सुगम वैदिक तकनीक है। जागता है, तो वह सबसे अधिक शक्तिशाली होता है। आनन्द कहां है, जहां सारे देवी-देवता होते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि हम वेद-

विज्ञान और वैदिक तकनीकों के अभ्यास में 'आनन्द' की जो वर्षा होती है, उससे व्यक्ति-जीवन का हर पक्ष खिल उठता है। जीवन आनन्दमयी गुणों में परिणत हो जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि अपने भीतर देवी-देवताओं की शक्ति जगाने के लिए, आनन्दमयी बनाने के लिए वैदिक तकनीकों को अपनाये रखें, जुड़े रहें। मनुष्य अपने भीतर इनकी शक्तियों को जगा लेता है, तो वह सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान होता है। यह भारत का असली ज्ञान है। विदेशी प्रशासकों ने अपने प्रशासन में इसे मिथक कह कर प्रचारित किया है। अंग्रेजी पढ़ाई और संस्कृति के प्रभाव में बहुत से भारतीय भी इस विद्या को मिथक मानने लगे। लेकिन अब आधुनिक विज्ञान शोधों द्वारा इस विधा को विज्ञान सिद्ध कर रहा है तो लोगों को समझ आ रहा है। आज भारतीय वेद-विद्या वेन प्रति लोगों का रुझान और विश्वास बढ़ रहा है और लोग धीरे-धीरे उसे पुनः अपना रहे हैं।